संगीत जगत के वर्तमान काल में इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों का महत्व

Sakshi Arora
MPA (Vocal),
Performing Art Dept. NBSCFF
Subharti University, Meerut

सारांश–

आज के इस दौर में जहाँ विकास को प्रत्येक क्षेत्र में देखा जाता है तथा निरन्तर क्रांतिकारी परिवर्तनों को जन्म दिया जा रहा है, वहीं संगीत के क्षेत्र में भी बहुत प्रभावी तकनीकों का उपयोग किया जाता है, जिसका प्रभाव संगीत तथा संगीत शिक्षा पर देखा जा सकता है। इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों को प्रौद्योगिकी द्वारा सौंपा गया ऐसा वरदान है, जिसके द्वारा कई सुविधाएँ संगीत जगत में प्रदान की गई हैं परन्तु वे उस वरदान से काफी हद तक कम है जिससे उस हानि को नज़रअंदाज किया जा सकता है तथा एक अन्य वैकल्पिक रूप से उस हानि से बचा जा सकता है। आज संगीत व संगीत शिक्षा में इलैक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी के प्रचार–प्रसार के लिए भारत में परिपक्व माहौल बन गया है। डेस्क–टॉप पब्लिशिंग, शिक्षा व मनोरंजन के क्षेत्र में ओडियो–वीडियों आदि इलैक्ट्रॉनिक सहायक के रूप में, रेडियो व टी0वी0 कार्यक्रम, इलैक्ट्रॉनिक गैजेट्स आदि विविध प्रयोग पहले से ही शैक्षणिक प्रक्रिया में प्रवेश कर चुके हैं।

मुख्य शब्दःइलेक्ट्रॉनिक उपकरण / इलैक्ट्रॉनिक गैजेटस।

प्रस्तावना–

संगीत दोनों ही प्रौद्योगिक कलात्मक व तकनीकी रचनात्मक क्रियाओं से जुड़ा है तथा संगीत में अभिव्यक्ति के नए रूपों को विकसित करने के लगातार प्रयास भी होते है, जिसमें कि प्रौद्योगिकी के साथ–साथ शारीरिक रूप से नए उपकरणों व सॉफ्टवेयर का भी निर्माण किया जा रहा है।

यह आश्चर्य की बात नहीं है यदि यह कहा जाए की प्रौद्योगिकी से परम्परागत शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में तथा कलाकारों के कलाबोध में काफी परिवर्तन हुआ है। भारतीय संगीत की दोनों पद्धतियों (हिन्दुस्तानी व कनार्टक) में प्रौद्योगिकी तथा आधुनिक उपकरणों का प्रयोग व्यवसायिक प्रशिक्षण तथा संगीत शिक्षा दोनों ही क्षेत्रों में देखा जाता है। इलैक्ट्रॉनिक संस्करण को हमारे समक्ष प्रस्तुत एक अति उल्लेखनीय कार्य है। आज इलैक्ट्रॉनिक संगीत वाद्य संगीत विद्यार्थियों के मंच प्रदर्शन व दैनिक अभ्यास में पसंदीदा सहायक वाद्य बन गए हैं।

व्यवसायिक प्रशिक्षणों में इलैक्ट्रॉनिक संगीत वाद्य–

व्यवसायिक प्रशिक्षणों के अंतर्गत संगीत के तकनीकों का अध्ययन आमतौर पर नई ध्वनियों को बनाने, प्रदर्शन करने, रिकार्डिंग करने, प्रोंग्रामिंग सिक्वेंसर या अन्य संगीत में हेरफेर मिश्रण और पुनरूत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी के रचनात्मक उपयोग में सम्बन्धित है। संगीत प्रौद्योगिकी में अंतःविषय कार्य की बढ़ती भूमिका के कारण नई संगीत तकनीकों को विकसित करने वाले व्यक्तियों को कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग, कम्प्यूटर हार्डवेयर डिज़ाइन ध्वनिकी रिकॉर्ड निर्माण या अन्य क्षेत्रों में पृष्ठभूमि या प्रशिक्षण हो सकता है तथा संगीत प्रौद्योगिकी कार्यक्रमों में इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर संगीत, ऑडियो–विज़ुअल उत्पादन और पोस्ट–प्रोडक्शन, मास्टरिंग, फिल्म और मल्टीमीडिया प्रोडक्शन तथा ऑडियो के लिए करियर के लिए छात्रों को प्रशिक्षित करते हैं।

संगीत शिक्षा में इलैक्ट्रॉनिक वाद्यों का उपयोग–

स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर कॉलेज डिप्लोमा और विश्वविद्यालय की डिग्री सहित कई अलग–अलग शैक्षिक स्तरों पर संगीत तकनीक सिखाई जाती है। इलैक्ट्रॉनिक और डिजिटल संगीत तकनीको का व्यापक रूप से उच्च विद्यालय, कॉलेज और विश्वविद्यालय के संगीत कार्यक्रमों में छात्रों को प्रशिक्षण देने के लिए व संगीत शिक्षा में सहायता के लिए उपयोग किए जाते हैं। तबला, हारमोनियम, तानपूरा आदि परम्परागत वाद्यों का निर्माण अत्यन्त कुशल कारीगरों द्वारा उपकरणों तथा श्रम गहन तकनीक के उपयोग द्वारा किया जाता है। संगीतज्ञों को वाद्यों के इस परम्परागत संस्करण के अन्तर्गत तबला, हारमोनियम व तानपूरा द्वारा मंच प्रदर्शन में संगत व दैनिक अभ्यास हेतु किसी अन्य व्यक्ति अथवा संगतकार पर निर्भर रहना पड़ता है जिससे वे दिन या रात किसी भी समय स्वेच्छानुसार किसी भी अवधि तक अभ्यास करने में सक्षम नहीं हो पाते हैं। कुछ पेशेवर संगीतज्ञ ही इसमें सक्षम होते हैं।

इसके साथ ही संगीत सीखने में विद्यार्थियों को भी काफी कठिनाई होती है। उन्हें स्वर तथा ताल को समझने में भी काफी समय लग जाता है। विद्यार्थियों को अलग से पैसा देकर संगतकार की मदद लेनी पड़ती है। वाद्यों में इलैक्ट्रॉनिक संस्करण में संगीतकार व संगीत विद्यार्थियों की उपर्युक्त सभी समस्याओं को कुछ हद तक कम कर दिया है। इसी कारण इन वाद्यों की सस्ती कीमत पर बड़े पैमाने पर उत्पादन बढ़ा है।

इलैक्ट्रॉनिक सहायक वाद्यों के अन्य महत्व तथा आवश्यकताएँ–

ये इलैक्ट्रॉनिक सहायक वाद्य व्यवसायिक रूप से सुविधाजनक है, क्योंकि जब हम संगीत वाद्यों को एक शहर से दूसरे शहर लेकर जाते हैं तो इसमें बहुत असुविधा होती है क्योंकि ये बहुत ही नाजुक व देखभाल कर रखने वाले वाद्य होते हैं, तथा इनके टूटने व बिगड़ने का डर सदैव बना रहता है। कार व टैम्पों आदि में रखने व लेकर बैठने में कठिनाई होती है, साथ ही इसे विदेश ले जाने में भी काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शायद, यह सब देखते हुए ही इसका आविष्कार किया गया है। इस दृष्टि से यह सही भी है।

एक अच्छे से डिज़ाइन किए हुए इलैक्ट्रॉनिक वाद्यों का अच्छी मशीनों व उच्च तकनीकी प्रक्रिया द्वारा सामूहिक उत्पादन किया जाता है, जोकि प्रदर्शन की एक यथोचित गुणवत्ता का विश्वास भी दिलाते है, जिसे मापा भी जा सकता है।

इन वाद्यों का महत्व इस कारण और भी बढ़ जाता है कि इनके रखरखाव में कम खर्चा आता है, लाने व ले जाने की सुविधा उपयोग करने में आसानी आदि सुविधाएँ भी उपलब्ध है। इन वाद्यों का सबसे सकारात्मक बिन्दु टॉनल क्वालिटी है। इनकी टॉनल क्वालिटी लगभग परम्परागत वाद्यों के समान ही होती है। संगीतकार व संगीत विद्यार्थी इलैक्ट्रॉनिक वाद्यों द्वारा किसी भी समय घंटों अभ्यास कर सकते हैं, जिससे निरन्तर अभ्यास ही सफलता की कुँजी की कहावत आसानी से चरितार्थ होती है।

इस प्रकार सिद्ध होता है कि इन इलैक्ट्रॉनिक वाद्यों ने संगीत सीखने तथा संगीत–प्रदर्शन के लिए बहुत सारे लोगों को प्रेरित किया है। इन वाद्यों की आवश्यकता तथा महत्व को भारतीय शास्त्रीय संगीत विशेषतः हिन्दुस्तानी संगीत में कभी भी नकारा नहीं जा सकता है।

निष्कर्ष–

संगीत जगत में जहाँ इन वैज्ञानिक उपकरणों की सुविधाओं से कई लाभों का अंकन किया गया है, वही इस सुविधा से हानि भी महसूस की गई है, जिसमें देखा गया है कि इलैक्ट्रॉनिक वाद्यों से प्रेरणा की कमी होती है तथा घर या केन्द्र में बैठकर फिज़िकल प्रैक्टिस के लिए तो सहायक होता है लेकिन मैंटल प्रैक्टिस के लिए मैन्युअल वाद्यों का उपयोग करना आता है तथा श्रुतियों का ज्ञान प्राप्त होता है। जहाँ एक ओर संगीतार भी अपनी योग्यता व मंच प्रदर्शन में वृद्धि हेतु इन इलैक्ट्रॉनिक वाद्यों की सहर्ष स्वीकार कर रहे है।

अतः यह स्पष्ट होता है कि इलैक्ट्रॉनिक वाद्यों का प्रयोग परम्परागत सहायक वाद्यों के विकल्प के तौर पर हो रहा है जो कि शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार तथा नवीन संगीत विद्यार्थियों के अभ्यास सत्र हेतु भी विशेष रूप से लाभप्रद है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. कुमार, नरेश (2013), हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयोग एवं परिवर्तन, ISBN:9788184574210
2. शर्मा, योगिता (2008), हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के तंत्र वाद्यों में परिवर्तन एवं प्रवृत्तियाँ, ISBN:9788184570632
3. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Music_technology_(electronic_and_digital)
4. Pisano, J, (2005), Music Technolog in Education.https://www.mustech.net
5. Crab, S. (1995). Detailed History of Electronic Instruments and Electronic Music Technology at '120 Years of Electronic Music'.https://www.120years.net.